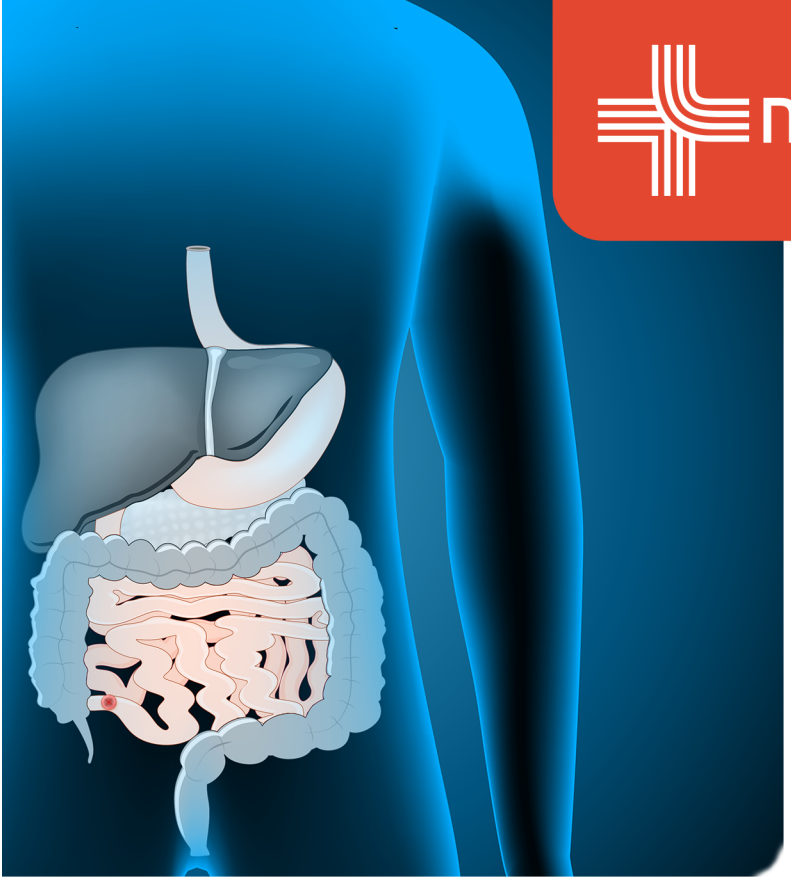

MEDANTA

इलियोस्टॉमी

INSTITUTE OF DIGESTIVE AND HEPATOBILIARY SCIENCES

इलियोस्टॉमी क्या है?

इलियोस्टॉमी सर्जन द्वारा बनाया गया एक छोटा मुख जैसा छेद या स्टोमा होता है जो इलियम (छोटी आंत का निचला सिरा) को पेट की दीवार से जोड़ता है। सर्जन इस स्टोमा को बाहर से एक थैली (इलियोस्टॉमी बैग) से जोड़ देते हैं जहां सारा पचा हुआ भोजन एकत्रित होता है।

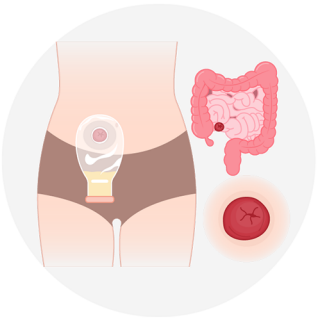

इलियोस्टॉमी की आवश्यकता क्यों पड़ सकती है?

यदि बड़ी आंत की ऐसी समस्या है जिसका इलाज दवाओं से संभव नहीं है तो डॉक्टर इलियोस्टॉमी की सलाह दे सकते हैं।
निम्नलिखित परिस्थितियों में इलियोस्टॉमी प्रभावी सिद्ध हो सकती है:

- इंफ्लेमेटरी बॉवल डिजीज (IBD) (क्रोहनस डिजीज, अल्सरेटिव कोलाइटिस)
- मलाशय या पेट का कैंसर
- जेनेटिक पॉलीपोसिस जो कैंसर का कारण बन सकते हैं
- आंतों के जन्मजात विकार
- आंतों की चोट या दुर्घटना
- हिर्शस्प्रुंग रोग

इलियोस्टॉमी से पहले क्या सावधानियां बरतनी चाहिए?

प्रक्रिया से पहले निम्नलिखित सावधानियां बरतें:

- डॉक्टर को चल रही समस्त दवाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दें। डॉक्टर मरीज़ को सर्जरी से पहले कुछ दवाएँ बंद करने की सलाह दे सकते हैं।
- यदि मरीज़ धूम्रपान करते हैं, तो उसे तुरंत छोड़ें।
- सर्जन द्वारा बताए आहार-संबंधी निर्देशों का सख़्ती से पालन करें।
- सर्जरी से लगभग 12 घंटे पहले पानी सहित किसी भी चीज़ का सेवन करने से बचें।

इलियोस्टॉमी के दौरान क्या होता है?

- सबसे पहले प्रक्रिया मरीज़ को एनेस्थीसिया दिया जाता है।
- इस प्रक्रिया में सर्जन मरीज़ के पेट के दाहिनी ओर एक छोटा चीरा लगाते हैं ताकि छोटी आंत के अंतिम भाग (इलियम) के लिए रास्ता बनाया जा सके, जिसे स्टोमा कहते हैं।
- इस स्टोमा से इलियम के एक हिस्से को टाँको की सहायता से जोड़ देते हैं।
- इलियोस्टॉमी के प्रकार के अनुसार सर्जन एक या दो स्टोमा बनाते है।

- इस स्टोमा से एक थैली जुड़ी होती है जहाँ मल इकट्ठा होता है।
- इसके बाद सर्जिकल क्षेत्र का अच्छी तरह निरीक्षण कर सर्जन इसे बंद कर देते हैं।

इलियोस्टॉमी के बाद क्या होता है?

- सर्जरी के बाद मरीज़ को कुछ घंटों के लिए रिकवरी कक्ष में रखा जाता है, जहाँ एक टीम उनके रक्तचाप, श्वसन, और अन्य शारीरिक मानको पर निगरानी रखती है।
- ऑपरेशन के बाद स्टोमा से जुड़ी थैली में शुरुआत में मरीज़ को रक्त दिख सकता है।
- मरीज़ को स्टोमा में सूजन भी दिख सकती है जो कुछ दिनों में ठीक हो जाती है।
- मरीज़ को आम तौर पर 3 से 10 दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ सकता है, या जब तक कि मल स्टोमा के रास्ते स्वतः बाहर न आने लगे और वे इसकी देखभाल करने में सक्षम न हो न हो जायें।

इलियोस्टॉमी के क्या जोखिम हो सकते हैं?

इलियोस्टॉमी के बाद निम्नलिखित जोखिम हो सकते हैं:

- संक्रमण
- रक्तस्राव
- रक्त के थक्के बनना
- ऑपरेशन के दौरान आस-पास के अंगों की क्षति
- स्कार ऊतक (tissues) का बनना
- स्टोमा से मल निकलने में परेशानी
- आँतों में रुकावट
- स्टोमा से जुड़ी समस्याएँ, जैसे त्वचा में जलन और तरल स्राव

किन परिस्थितियों में तुरंत अपने डॉक्टर से संपर्क करें?

अगर मरीज़ को निम्नलिखित में से कोई भी लक्षण महसूस हो तो तुरंत डॉक्टर को सूचित करें:

- बुख़ार या ठंड लगना
- स्टोमा थैली में अत्यधिक रक्त इकट्ठा होना
- पेट में तेज ऐंठन, दर्द, मतली, या उल्टी आना
- स्टोमा के आस-पास सूजन, लालिमा, या रक्तस्राव होना

24/7 सेवा

मेदांता **24X7**
आपातकालीन हेल्पलाइन

1068

अपॉइंटमेंट बुक करने
के लिए स्कैन करें

medanta हेल्पलाइन
890-439-5588
Visit us at : www.medanta.org

मेदांता नेटवर्क: गुरुग्राम । दिल्ली । लखनऊ । पटना । इंदौर । रांची । नोएडा *
शीघ्र प्रारम्भ